बहुआपदाओं के सन्दर्भ में

आंगनबाड़ी सेविकाओं हेतु मार्गदर्शिका

¼iol r;kjh] fjLikUl ,o iuokil lh dfUnr½

पृष्ठभूमि

बिहार राज्य अपनी भौगोलिक बनावट तथा नदिया. ं/नालों की अधिकता के कारण बाढ़ की दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील है। राज्य के लिए बाढ़ एक मुख्य आपदा के तौर पर है। 38 में से 28 जिले बाढ़ प्रवण क्षेत्र में आते हैं। हाल के दिनों में वर्षा की अनियमितता तथा कम या असमय बारिश का असर इस राज्य पर भी पड़ा है और अब सुखाड़ भी यहाँ के लिए एक प्रमुख आपदा के तौर पर स्थापित हो गयी है। इसके साथ ही राज्य भूकम्प की दृष्टि से भी अति संवेदनशील है। राज्य के 10 जिले सिसमिक जोन–5, 22 जिले सिसमिक जोन–4 एवं शेष 6 जिले सिसमिक जोन 3 में आते हैं। इन आपदाओं के साथ–साथ पिछले कुछ वर्षों में राज्य में कुछ अन्य आपदाओं जैसे–अगलगी, ठनका, आँधी–तूफान, शीतलहर, लू, सड़क/रेल/नाव दुर्घटनाओं व डूबने से होने वाली मौतों की भी घटनाएं बढ़ी हैं। उपरोक्त वर्णित बहु आपदाओं के अतिरिक्त साल 2020 की शुरुआत से ही कोरोनो वायरस महामारी ने स्वास्थ्य संकटों से पूरी दुनिया को प्रभावित किया है कुछ ऐसा ही माहौल बिहार में भी है जहाँ कोरोना वायरस के बढ़ते पॉजिटिव केसों के साथ बदलते मौसम में बहुआपदाओं के आने का आने का खतरा बढ़ता चला जाता है। वर्तमान सन्दर्भ में आपदा के दौरान आपदा ग्रसित क्षेत्रों में अफरा–तफरी जैसा माहौल होने की वजह से कोरोना महामारी के तीव्र गति से फैलने की आशंका बढ़ जाती है।

यह स्पष्ट है कि आपदाओं का प्रभाव विभिन्न रूपों में समुदाय, बुनियादी ढाँचों व अन्य बुनियादी सुविधाओं तथा प्रशासनिक ढाँचों पर पड़ता है। बच्चों एवं महिलाओं के ऊपर बाढ़ एवं अन्य आपदाओं का त्वरित प्रभाव पड़ता है एवं उनका पोषण तथा स्वास्थ्य का स्तर नीचे गिरने लगता है, जिससे अनेक बीमारियों से ग्रसित होने की संभावना बढ़ जाती है। गंभीर स्थिति होने पर जान भी जाने का खतरा बना रहता है। चूंकि आँगनबाड़ी सेविकाएं गाँव के कमजोर वर्गों जैसे– बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं तथा सरकार के बीच कड़ी का काम करती हैं। आपदा की स्थिति में जब चारों तरफ अभाव रहता है, समुदाय को भरपेट भोजन नहीं मिल पाता है, शुद्ध पेयजल की उपलब्धता नहीं होती है और खाना व पोषण का अभाव रहता है, उस समय आँगनबाड़ी सेविकाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है।

अतः इन आँगनबाड़ी सेविकाओं को आपदाओं एवं उससे बचाव के प्रति जागरूक करते हुए आपदा पूर्व तैयारियों, आपदा के दौरान उसके प्रबन्धन एवं आपदा के उपरान्त व्यवस्था को त्वरित रूप से पहले की स्थिति में लान में सहयोग करने हेतु गतिविधियां चिन्हित करना एवं उसके अनुरूप कार्य करने हेतु प्रेरित करने की दिशा में यह एक प्रयास है।

बहु आपदाओं का समुदाय पर प्रभाव (पोषण व स्वास्थ्य की दृष्टि से)

1 बहु आपदाओं का आँगनबाड़ी केन्द्रों एवं स्वास्थ्य केन्द्रों पर दुष्प्रभाव

राज्य के अधिकाँश आबादी क्षेत्रों की बसाहट नीची भूमि में है और बाढ़ आने की स्थिति में वहाँ स्थित आँगनबाड़ी केन्द्र भी पानी में डूब जाते हैं और बच्चों से सम्बन्धित दस्तावेज, पोषण सामग्री आदि डूब जाने के कारण बाढ़ के दौरान एवं बाद दोनों स्थितियों में इनकी सेवाएं प्रभावित होती हैं। कुछ क्षेत्र तो ऐसे भी हैं, जहाँ महीनों तक जल–जमाव के कारण आँगनबाड़ी केन्द्र बन्द रहते हैं और बच्चों एवं गर्भवती माताओं को दी जाने वाली पोषण सम्बन्धी सेवाएं बाधित होती हैं। राज्य के कोई भी आँगनबाड़ी केन्द्र भूकम्प की दृष्टि से सुरक्षित नहीं हैं। भूकम्प आने की स्थिति में केन्द्र एवं बच्चों दोनों को क्षति हो सकती है। बसाहट क्षेत्रों के निकट स्थापित ये आँगनबाड़ी केन्द्र अगलगी आपदा से भी सुरक्षित नहीं हैं। अगलगी की चपेट में आने पर दस्तावेज, अन्य सामग्री आदि सभी जल जायेंगे, जिससे विभागीय क्षति होगी ही साथ ही बच्चों को पोषण उपलब्धता पर भी व्यापक असर पड़ेगा। यद्यपि सुखाड़, पाला, शीतलहर, लू आदि आपदाओं का आँगनबाड़ी केन्द्रों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है, फिर भी इन आपदाओं की स्थिति लम्बे समय तक बने रहने पर इसका प्रभाव आँगनबाड़ी सेविकाओं पर होने से उसका असर आँगनबाड़ी केन्द्रों के संचालन पर पड़ सकता है। बच्चे भी इन आपदाओं से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए लू एवं शीतलहरी के दिनों में आँगनबाड़ी केन्द्रों का संचलन बाधित हो सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में कोविड के परिप्रेक्ष्य में देखें तो एक कमरे में संचालित आँगनबाड़ी केंद्रों में लोगों एवं बच्चों के मध्य 6 फीट की शारीरिक दूरी का सही से अनुपालन न हो पाने के कारण संबंधितों में कोरोना संक्रमण के फैलने की आशंका बढ़ जाती है। इसके साथ ही प्रायः आँगनबाड़ी केंद्रों में साफ–सफाई का सही इंतजाम न होने के कारण आँगनबाड़ी सेविकाओं एवं बच्चों के बीच संक्रमण फैल सकता है।

orleku ifjn'; e dkfoM d ifji{; e
n[k rk ,d dej e lpkfyr vkxuckMh
dæk e ykxk ,o cPpk d e/;

6 QhV

dh 'kkjhfjd njh dk lgh l vuikyu
u gk iku d dkj.k lcf/krk e dkjkuk
lØe.k d Qyu dh vk'kdk c< tkrh gA

2 पोषण व स्वास्थ्य की दृष्टि से समुदाय पर प्रभाव (विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों के सन्दर्भ में)

आपदाओं के सन्दर्भ में महिलाएं एवं बच्चे सर्वाधिक नाजुक समूहों की श्रेणी में आते हैं जिसके अनेक सामाजिक एवं आर्थिक कारण हैं। गौरतलब है कि बिहार राज्य में बच्चों की जनसंख्या देश के किसी भी राज्य से ज्यादा है। यहाँ 0–18 वर्ष के बच्चों की जनसंख्या लगभग 48 प्रतिशत है, जो पूरे राज्य की आबादी का लगभग आधा है। बाढ़ एवं सुखाड़ग्रस्त इस राज्य में बाल कुपोषण एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक समस्या है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2020–2021 की रिपोर्ट के अनुसार यहाँ पर 42.8 प्रतिशत बच्चे गम्भीर रूप से कुपोषित हैं। 6 वर्ष तक की आयु के लगभग 63.5 प्रतिशत बच्चों में खून की कमी है। इसी प्रकार महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति पर बात करें तो 15–49 वर्ष की 58.3 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं तथा इसी आयु वर्ग की 60.4 प्रतिशत सामान्य महिलाओं में खून की कमी पायी गयी है।

वर्तमान कोरोना की परिस्थितियों में लोगों का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। वायरस से संक्रमित हो चुके लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य तो स्वाभाविक रूप से प्रभावित हो ही रहा है परन्तु गैर संक्रमित लोगों का मानसिक स्वास्थ्य भी कुछ कम प्रभावित नहीं हो रहा है क्योंकि अधिकतर गैर संक्रमित व्यक्ति में कोरोना वायरस से संक्रमित होने का डर व्यक्ति की जीवन शैली को संकुचित करते हुए काफी मानसिक दिक्कतें दे रहा है।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2020–2021
की रिपोर्ट के अनुसार यहां पर

42.8%

cPps xEHkhj :i ls dqiksf"kr gSA
6 o"kZ rd dh vk;q ds yxHkx

63.5%

cPpksa esa [kwu dh deh gSA

15–49 वर्ष की
लगभग

58.3%

xHkZorh efgykvksa rFkk blh
vk;q oxZ dh

60.4%

lkekU; efgykvksa esa [kwu dh
deh ik;h x;h gSA

प्रभावों को कम करने की दिशा में आँगनबाड़ी सेविकाओं के लिए चिन्हित गतिविधियां

आँगनबाड़ी सेविकाओं के लिए आपदा पूर्व तैयारी, आपदा के दौरान रिस्पान्स करने तथा आपदा के बाद पोषण सेवाओं को त्वरित रूप से पुरानी स्थितियों में वापस लाने हेतु कुछ गतिविधियां निर्धारित की जा रही हैं, जो निम्नवत् हैं –

बाढ़

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- निचली क्षेत्र पर बने एवं बाढ़ के पानी में डूबने वाले आँगनबाड़ी केन्द्रों की पहचान कर लें।
- बाढ़ आपदा के दौरान अस्थाई आँगनबाड़ी संचालन के लिए पूर्व में ही सुरक्षित वैकल्पिक स्थलों का चयन कर अपने उच्चाधिकारियों को इसकी सूचना देकर पूर्व में ही संस्तुति प्राप्त कर लें।
- अस्थाई केन्द्र संचालन हेतु स्थल की पहचान करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि वहाँ पर आवश्यक सुविधाएं जैसे– पेयजल, शौचालय, बच्चों के बैठने हेतु सुरक्षित स्थान, खाना पकाने का स्थान एवं केन्द्र से सम्बन्धित सामग्रियों को सुरक्षित रखने की समुचित व्यवस्था हो।
- बाढ़ के खतरे को देखते हुए आँगनबाड़ी केन्द्र पर उपस्थित सभी सामग्रियों को ऐसे ऊँचे स्थान पर पहुँचा दें, जहां बाढ़ का पानी न पहुँच सके।
- इस वैकल्पिक व्यवस्था से आँगनबाड़ी के सभी लाभार्थियों जैसे– बच्चे एवं उनके अभिभावकों को परिचित करायें एवं उनका सहयोग भी लें।
- इस सम्बन्ध में सभी सम्बन्धित पदाधिकारियों को पूर्व में ही अवगत करायें एवं अपेक्षित सहयोग प्रदान करने के लिए उनसे अनुरोध भी करें।

- बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में प्रयास करें कि आगामी तीन माह (बरसात के दौरान) के लिए पोषण आहार, राशन, सम्बन्धित अन्य सामग्री, ईंधन आदि की अग्रिम व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।
- बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की सभी आँगनबाड़ी सेविकाएं अपने–अपने पोषक क्षेत्र के कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चों की पहचान कर लें ताकि बाढ़ के दौरान उन की विशेष निगरानी की जा सके तथा उन्हें कुपोषण से होने वाले खतरों से बचाने का प्रबन्ध किया जा सके।
- बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की सभी आँगनबाड़ी सेविकाएं अपने–अपने पोषक क्षेत्र की गर्भवती महिलाओं की सूची उनकी संभावित प्रसव तिथि के साथ तैयार कर लें ताकि आवश्यकता पड़ने पर स्वास्थ्य विभाग से सम्पर्क स्थापित कर उनके सुरक्षित प्रसव हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके।
- स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों के साथ समन्वय स्थापित कर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित करायें।
- आपदा प्रबंधन विषयक पर बच्चों में स्वास्थ्य एवं पोषण को बनाये रखने के लिए आँगनबाड़ी कार्यकत्री वी0डी0एम0सी, ए0एन0एम, महिला मंडल, आशा, पंचायत प्रतिनिधि, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक एवं अन्य क्षेत्रीय नेताओं से समन्वित बैठक करें। आँगनबाड़ी सेविकाओं द्वारा आपदा प्रबंधन केंद्रित किसी भी समन्वय बैठक को संचालित करने से पूर्व निम्नांकित कार्य सुनिश्चित किये जायेंगे–

ykxk e 6 QhV
dh 'kkjhfjd njh

pgjk ij Ql
ekLd dk gkuk

cBd gky d
ckgj gM ok'k
,o lfuVkbtj
dk ek tn gkuk

- आँगनबाड़ी सेविकाएं यह सुनिश्चित कर लें कि संचालित किसी भी बाढ़ पूर्व तैयारी वाली बैठक में एक दूसरे का अभिवादन नमस्कार से किया जाये एवं गले और हाथ मिलाने को प्रतिबंधित किया जाये।
- आँगनबाड़ी केंद्र को दिन के कार्यालय समय में हर दो घंटों में 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट से सैनिटाइज करायें एवं इसके सम्बन्ध में एक रजिस्टर तैयार करें जिसमें हर बार किये गए सैनिटाइजेशन को दर्ज किया जा सके।
- आँगनबाड़ी केंद्र एवं वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र में कोविड –19 की रोकथाम के अंतर्गत पी0पी0ई0 किट, कोरोना किट, सैनिटाइज करने हेतु स्प्रे मशीन एवं 1प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट, फेस मास्क, हैंड वाश स्टेशन, हैंड सैनिटाइजर एवं उचित मात्रा में ओ0आर0एस के पैकेट की उपलब्धता सुनिश्चित कर लें।
- आँगनबाड़ी सेविकाओं की आपस में अलग – अलग टीम बनाना सुनिश्चित करें जो आपदा के दौरान राहत शिविर में बने वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र में बच्चों की पोषण एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी उचित देखभाल करते हुए बच्चों के बीच की 6 फीट की शारीरिक दूरी

एवं उनके चेहरे पर फेस मास्क का होना सुनिश्चित करेंगी।

- स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों के साथ समन्वय स्थापित कर गर्भवती एवं बच्चों का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित करें।

प्रत्युत्तर (Response)

- बाढ़ आपदा से प्रभावित आँगनबाड़ी केन्द्रों को पूर्व चिन्हित सुरक्षित स्थानों पर स्थापित कर लें।
- रिस्पांस करते समय आँगनबाड़ी सेविकाओं एवं लेडी सुपरवाइजर के हाथों में दस्ताने एवं चेहरे पर फेस मास्क का होना अनिवार्य है।
- आँगनबाड़ी सेविकाएं एवं लेडी सुपरवाइजर यह सुनिश्चित करें कि आपदा के दौरान कन्टेनमेंट जोन के लोगों– खासतौर से बच्चों का सुरक्षित बचाव कर राहत शिविर तक पहुँचाने में पंचायत प्रतिनिधियों की मदद करेंगी। इस दौरान वे पी0पी0ई0 किट अवश्य पहने रहेंगी।
- राहत शिविरों के पास ही आँगनबाड़ी केन्द्र स्थापित कर उसकी आकर्षक साज–सज्जा करें ताकि बच्चे आकर्षित होकर वहाँ आ सकें और बाढ़ विभीषिका से उत्पन्न भय का माहौल कम करते हुए उनका मनोरंजन हो सके।
- स्थापित राहत शिविरों में अस्थाई आँगनबाड़ी केन्द्र की स्थापना कर प्रभावित बच्चों को आवश्यक सेवाएं दें।
- राहत शिविरों में बच्चों को व्यस्त रखने हेतु उनके साथ खेल–कूद, शारीरिक अभ्यास, पठन–पाठन तथा पौष्टिक भोजन देने की समय सारिणी तय कर उसी अनुसार कार्य करें।
- आपदा राहत शिविरों में बच्चों के लिए दूध एवं पौष्टिक आहार की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सम्बन्धितों से सम्पर्क करें।

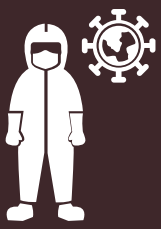

आंगनबाड़ी सेविकाएं एवं लेडी सुपरवाइजर
यह सुनिश्चित करें कि

vkink d nkjku dUVueV
tku d ykxk& [kklrkj l
cPpk dk ljf{kr cpko dj
jkgr f’kfoj rd igpku e
ipk;r çfrfuf/k;k dh enn
djxhA bl nkjku o ih0ih0b0
fdV vo'; igu jgxhA

jkgr f’kfojk e
nfy;k@f[kpMh@gyok
vkfn cuku e f’kfoj
dh efgykvk dk lg;kx
djuk lfuf’pr dj rkfd
NkV cPpk dk me d
vulkj ikf"Vd Hkktu
fn;k tk ldA

- आँगनबाड़ी केन्द्र के साथ ही स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय स्थापित कर राहत केन्द्रों में अथवा निकट मैटरनिटी हट बनाना सुनिश्चित करें ताकि पोषण एवं स्वास्थ्य व मातृत्व सेवाएं सभी सम्बन्धितों को प्राप्त होती रहें।
- बाढ़ राहत शिविरों में धात्री माताओं को बच्चों को स्तनपान कराने के लिए विशेष सुरक्षित स्थलों की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- राहत शिविरों में धात्री माताओं के लिए पौष्टिक आहार की सुविधा उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।
- पंचायत प्रतिनिधियों एवं राहत शिविर प्रबन्धन वाले अन्य लोगों के साथ समन्वय स्थापित कर बच्चों एवं बड़ों के भोजन का समय अलग निर्धारित करें और उन्हें अलग बिठाकर भोजन कराना सुनिश्चित करें।
- राहत शिविरों में दलिया/खिचड़ी/हलवा आदि बनाने में शिविर की महिलाओं का सहयोग करना सुनिश्चित करें ताकि छोटे बच्चों को उम्र के अनुसार पौष्टिक भोजन दिया जा सके।
- राहत शिविर में बनाये गए वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र पर प्रत्येक बच्चे का पंजीकरण अवश्य कराए और ध्यान रखें कि पंजीकरण काउण्टर पर शारीरिक दूरी का पालन किया जाये।
- वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र में यह सुनिश्चित करें कि लोगों के मध्य 6 फीट की शारीरिक दूरी हो एवं लोगों के चेहरों पर फेस मास्क लगे हों।
- आँगनबाड़ी केंद्र में जल वितरण स्थल, भोजन वितरण स्थल, प्रवेश एवं निकासी द्वार, विश्रामस्थल, शौचालय पर विशेष ध्यान देते हुए

बच्चों से आपस में 6 फीट की शारीरिक दूरी का पानी सुनिश्चित करायें।

- आँगनबाड़ी केंद्र में लोगों को कुछ वक्त पर निरंतर हाथ धोने के लिए एवं अपने सामानों से अन्य वस्तु को छूने पर तुरंत हाथ धोने के लिए प्रेरित करें ।
- आँगनबाड़ी केंद्र में अक्सर छूई जाने वाली सतह जैसे फर्श, 7 फीट तक की दीवारें, शौचालय, दरवाजों के कुंडे एवं हैंडल, मेज टेबल इत्यादि को प्रति घंटे सोडियम हाइपोक्लोराइट के घोल से साफ करना या कराना सुनिश्चित करें।
- आँगनबाड़ी केंद्र में कचरे का सुरक्षित निपटान किया जाना सुनिश्चित करें।
- राहत शिविरों में खाने से पहले हाथ धोने, साफ–सफाई, साबुन का प्रयोग आदि व्यवहारों पर विशेष ध्यान दें ताकि बीमारियों से बचाव हो सके।
- आँगनबाड़ी केंद्र या वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र में आने के पश्चात किसी में भी कोरोनावायरस की संदिग्धता के लक्षण पाए जाने पर तत्काल ही उस व्यक्ति को शिविर के क्वारण्टाइन सेंटर में भेजना सुनिश्चित करें एवं सरकारी अस्पताल से संपर्क कर जल्द से जल्द जाँच करायें। जाँच रिपोर्ट आने तक पीड़ित को कोरोना लक्षण वाले क्वारण्टाइन सेंटर में ही रखें।
- 2 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की माताओं के साथ बैठक कर स्तनपान एवं ऊपरी आहार को जारी रखने हेतु सलाह देना सुनिश्चित करें।

पुनर्वापसी (Recovery)

- आपदा से आँगनबाड़ी केन्द्रों को हुई क्षति का आकलन करें एवं उसकी विस्तृत रिपोर्ट अपने उच्चाधिकारियों को प्रेषित करें।
- अधिक क्षतिग्रस्त केन्द्रों को पूर्व चिन्हित वैकल्पिक स्थानों से संचालित करना सुनिश्चित करें। इस कार्य में गाँव के मुखिया, सरपंच, वार्ड सदस्य एवं अन्य प्रबुद्ध व सक्षम व्यक्तियों का सहयोग लें।
- कम क्षतिग्रस्त आँगनबाड़ी केन्द्रों की मरम्मति स्थानीय सहयोग से करना सुनिश्चित करें।
- बाढ़ के बाद आँगनबाड़ी केन्द्रों की साफ–सफाई कर उसे संचालित करने योग्य बनायें। आस–पास के गढ्ढों को पाट कर क्षेत्र को गढ्ढामुक्त कर लें।
- पेयजल स्रोतों को विसंक्रमित करा लें, क्योंकि बाढ़ के बाद प्रदूषित पानी पीने से डायरिया एवं अन्य जल जनित बीमारियों के होने का खतरा बढ़ जाता है।
- बच्चों को पुनः केन्द्र में लाने हेतु अभियान चलायें। इस हेतु घर–घर जाकर अभिभावकों/लोगों से सम्पर्क करें।
- यह सुनिश्चित करें कि बच्चे भीगे एवं सीलन वाले स्थान पर न बैठें। इससे उनके बीमार होने का खतरा बना रहेगा।

सुखाड

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- आँगनबाड़ी केन्द्रों पर मौजूद पेयजल स्रोतों की मरम्मति बाढ़ पूर्व करा लें एवं स्रोतों को विसंक्रमित भी करा लें।
- यदि आँगनबाड़ी केन्द्र किराये के भवन में चल रहा हो तो मकान मालिक से कह कर पेयजल स्रोत एवं शौचालय की व्यवस्था सही करा लें।
- कुपोषित एवं बीमार बच्चों के नाम, पता की सूची तैयार करें एवं उसे निरन्तर अद्यतन करते रहें।
- बच्चों, गर्भवती व धात्री महिलाओं को कुपोषण से बचाने के लिए पोषण आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- अपनी नियमित बैठकों में समुदाय के साथ कुपोषण एवं उससे बचाव के उपायों पर चर्चा अवश्य करें। इस दौरान यह सुनिश्चित करें कि लोग मास्क पहने हों तथा उनके बीच शारीरिक दूरी का पालन अवश्य हो रहा हो।

प्रत्युत्तर (Response)

- आँगनबाड़ी केन्द्रों से पूरक पोषाहार को निर्बाध रूप से जारी रखें। इसके साथ ही पोषाहार क्रय एवं रख–रखाव को आपात योजना के अनुसार क्रियान्वित करें।

आंगनबाड़ी केन्द्रों पर अगलगी से बचाव के उपायों की व्यवस्था जैसे

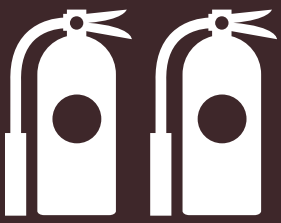

vfXu’kked ;=] cky] feVVh vkfn dh 0;oLFkk lqfuf’pr dj ysA rkfd vko';drk iMus ij mudk mi;kx fd;k tk ldsA

vxyxh ds dkj.k tys ;k ?kk;y 0;fDr;ksa dks mipkj fnykus gsrq LokLF; foHkkx ds Ý.Vykbu dk;ZdrkZvksa dks lg;ksx lqfuf'pr djsaA

अगलगी

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- आँगनबाड़ी केन्द्रों पर अगलगी से बचाव के उपायों की व्यवस्था जैसे– अग्निशामक यंत्र, बालू, मिट्टी आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कर लें। ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग किया जा सके।
- अगर आँगनबाड़ी केन्द्र के अगलगी आपदा से प्रभावित होने की संभावना है तो अस्थाई आँगनबाड़ी केन्द्र हेतु सुरक्षित स्थल की पहचान कर लें एवं इस हेतु अपने विभाग के उच्चाधिकारियों से पूर्व में ही संस्तुति ले लें।
- आशा बहनों के साथ मिलकर अगलगी से बचाव के उपायों पर समुदाय के बीच जागरूकता प्रसारित करना सुनिश्चित करें।
- फायर विभाग/आपदा विभाग द्वारा अगलगी पर आयोजित मॉकड्रिल में अपनी सहभागिता अवश्य सुनिश्चित करें। इस दौरान कोरोना से बचाव सम्बन्धी दिशा–निर्देशों का पालन करना एवं करवाना सुनिश्चित करें।

प्रत्युत्तर (Response)

- अगलगी से प्रभावित होने की स्थिति में पहले से चयनित स्थान पर अस्थाई आँगनबाड़ी केन्द्र का संचालन तत्काल करना सुनिश्चित करें ताकि प्रभावित परिवारों के बच्चों एवं महिलाओं को पोषक आहार उपलब्ध हो सके।

पुनर्वापसी (Recovery)

- आँगनबाड़ी केन्द्रों को अगलगी आपदा से हुई क्षति का आकलन करें और निर्धारित प्रारूप पर उसकी सूचना अपने उच्चाधिकारियों को भेजें।
- अगलगी के कारण जले या घायल व्यक्तियों को उपचार दिलाने हेतु स्वास्थ्य विभाग के फ्रण्टलाइन कार्यकर्ताओं का सहयोग सुनिश्चित करें।

भूकम्प

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- आपदा विभाग द्वारा भूकम्प से बचाव पर आयोजित मॉकड्रिल में अपनी सहभागिता अवश्य सुनिश्चित करें।
- भूकम्प आने की स्थिति में आँगनबाड़ी केन्द्र से बच्चों को सुरक्षित बाहर निकलने हेतु आपात मार्ग की पहचान एवं व्यवस्था अवश्य सुनिश्चित करें।
- भूकम्प आने के बाद आश्रय लेने हेतु सुरक्षित स्थल की पहचान कर लें।
- आँगनबाड़ी में आने वाले बच्चों को भूकम्प से बचाव के उपायों– जैसे– ''भूकम्प आने की स्थिति में किसी मेज या मजबूत फर्नीचर के नीचे बैठ कर उसके पाये को मजबूती से पकड़ कर रखें।'' अगर घर में कोई मजबूत मेज या फर्नीचर नहीं है तो घुटने के बल मजबूत दीवार के साथ फर्श पर बैठ जायें और अपने दोनों हाथ जमीन पर रखें।'' आदि का नियमित अभ्यास कराते रहें। इस दौरान शारीरिक दूरी का पालन सुनिश्चित कराने का भी अभ्यास करायें।
- आँगनबाड़ी में मौजूद आलमारी में भारी या शीशे का सामान निचले खाने पर रखें।

प्रत्युत्तर (Response)

- पूर्व चिन्हित रास्ते से बिना घबराये बच्चों को बाहर निकालकर सुरक्षित स्थान पर ले जायें।
- स्वयं भी सुरक्षित स्थान जैसे– मजबूत मेज या चौकी के नीचे कोना पकड़कर अथवा दीवार के सहारे फर्श पर बैठ जायें और बच्चों को भी बैठने का निर्देश दें।

पुनर्वापसी (Recovery)

- भयभीत न हों, शान्ति बनाये रखें, न तो स्वयं अफवाह फैलायें और न ही अफवाहों पर ध्यान दें।
- पहली थरथराहट के बाद दूसरी थरथराहट के आने की प्रतीक्षा कर, जहाँ जिस स्थिति में हैं, वहीं पर रहें।
- भूकम्प के झटके रूकने के बाद बच्चों को उनके अभिभावकों को सौंप दें।
- भूकम्प़ आपदा से आँगनबाड़ी केन्द्रों को हुई क्षति का आकलन करें और निर्धारित प्रारूप पर उसकी सूचना अपने उच्चाधिकारियों का भेजें।
- भूकम्प आने के बाद आँगनबाड़ी केन्द्र का भवन कितना सुरक्षित है, इसे अच्छी तरह जाँचने के बाद ही कक्ष में जायें एवं केन्द्र संचालित करें।

आंगनबाड़ी में आने वाले बच्चों को भूकम्प से बचाव के उपायों को बताएं जैसे

HkdEi vku dh fLFkfr e fdlh et ;k etcr Quhpj d uhp cB dj mld ik; dk etcrh l idM dj j[kA

Lo; Hkh ljf{kr LFkku tl& etcr et ;k pkdh d uhp dkuk idMdj vFkok nhokj d lgkj Q'k ij cB tk; vkj cPpk dk Hkh cBu dk fun'k nA

लू लगना

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- निर्जलीकरण से सुरक्षा हेतु विशेषकर बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा धात्री माताओं के लिए जन जागरूकता अभियान चलायें।
- आँगनबाड़ी केन्द्र पर ओ0आर0एस0 पैकेटों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु आशा बहनों से समन्वय स्थापित करें।
- समुदाय के बीच लू से बचाव हेतु सावधानियां अपनाने तथा लू लग जाने के उपरान्त क्या करें सम्बन्धी जागरूकता का प्रसार करें। जहाँ तक सम्भव हो, लोगों को घर के अन्दर ही रहने की सलाह दें।

प्रत्युत्तर (Response)

- आँगनबाड़ी केन्द्र के माध्यम से पेयजल व आईस पैक सहित ओ0आर0एस0 पैकेटों को प्रभावितों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। वृद्धाश्रमों, दृष्टिबाधितों/शिथिलांगों के विद्यालयों पर विशेष ध्यान दें।

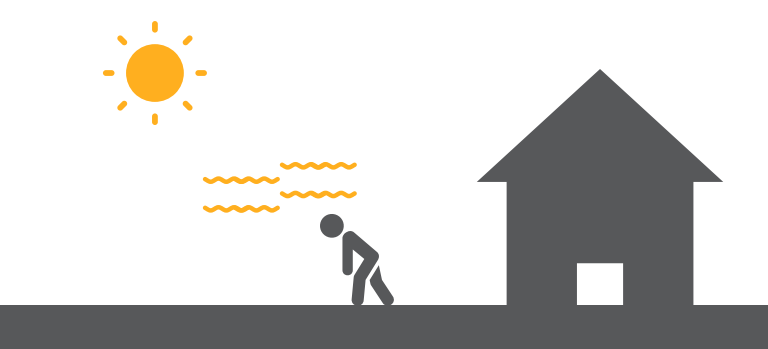

वज्रपात

पूर्व तैयारी (Preparedness)

- वज्रपात से बचाव के उपायों के बारे में बच्चों तथा अभिभावकों को सरल भाषा में बतायें।
- समाचार–पत्रों, रेडियो व टेलीविजन आदि संचार माध्यमों से मौसम की जानकारी लेती रहें।

प्रत्युत्तर (Response)

- आँगनबाड़ी केन्द्र के सभी खिड़की दरवाजे, तारों वाले विद्युत उपकरण बंद कर दें।
- आँगनबाड़ी केन्द्र के बाहर की लम्बी वस्तुएं जैसे– बिजली के खम्भे, पेड़ एवं अन्य खम्भों इत्यादि से दूर रहें।
- वज्रपात के दौरान किसी भी धातुमय वस्तु या वह स्थान जिसको पकड़ने या बैठने पर धातु से संपर्क हो, ऐसी वस्तुओं से तुरंत दूर हो जायें और बच्चों को भी ऐसा ही करने का निर्देश दें।
- याद रहे केवल रबर के टायर या जूते आपको वज्रपात के प्रभाव से नहीं बचा सकते हैं। वज्रपात में यदि आप कार में सफर कर रहे हैं तो तुरंत ही कार रोक के अपने हाथों को अपने पैरों पर रख के सचेत मुद्रा में वज्रपात के खत्म होने तक बैठ जाइये। कार में बैठे रहने के दौरान कोई भी धातु की वस्तु जैसे की मोबाइल चार्जर इत्यादि तक को नहीं छूना है।

पुनर्वापसी (Recovery)

पुनर्वापसी (Recovery)

- किसी भी जलभराव वाले क्षेत्र से एवं बिजली के गिरे हुए खम्बों वाले रास्तों से न जाएं
- रास्ते में गिरे हुए पेड़ों को ध्यान में रखते हुए सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाएं।
- जितना हो सके बच्चे, बूढ़ों, महिलाओं, एवं अन्य किसी भी जरूरतमंद की मदद करें।

चेकलिस्ट

बाढ़ आपदा

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	io`r;kjh		
1	निचली क्षेत्र में बने व बाढ़ में डूब जाने वाले आँगनबाड़ी केन्द्रों की पहचान हो गयी है।		
2	अस्थाई आँगनबाड़ी केन्द्र चलाने हेतु सुरक्षित वैकल्पिक ऊँचे स्थलों का चयन कर लिया गया है।		
3	अस्थाई केन्द्र पर पेयजल, शौचालय, बच्चों के बैठने हेतु सुरक्षित स्थान, खाना पकाने का स्थान उपलब्ध है।		
4	वैकल्पिक व्यवस्था को सभी बच्चों व उनके अभिभावकों को बता दिया गया है।		
5	आगामी तीन माह (बरसात के दौरान) के लिए पोषण आहार, राशन, सम्बन्धित अन्य सामग्री, ईंधन आदि की अग्रिम व्यवस्था कर ली गयी है।		
6	कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चों की पहचान कर ली गयी है।		

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
7	आशा के सहयोग से गर्भवती महिलाओं की पहचान कर ली गयी है।		
8	आँगनबाड़ी केन्द्रों को नियमित अन्तराल पर सैनिटाईज करने हेतु 1 प्रतिशत हाइपो सोडियम क्लोराइड की व्यवस्था की गयी है।		
9	आँगनबाड़ी केंद्र एवं वैकल्पिक आँगनबाड़ी केंद्र में कोविड –19 की रोकथाम के अंतर्गत पी0पी0ई0 किट, कोरोना किट, सैनिटाइज करने हेतु स्प्रे मशीन एवं 1प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट, फेस मास्क, हैंड वाश स्टेशन, हैंड सैनिटाइजर एवं उचित मात्रा में ओ0आर0एस के पैकेट की उपलब्धता सुनिश्चित की जा चुकी है।		
	iR;Rrj		
1	बाढ़ आपदा से प्रभावित केन्द्रों को पूर्व चिन्हित सुरक्षित स्थानों पर स्थापित कर लिया गया है।		
2	राहत शिविरों के पास ही आँगनबाड़ी केन्द्र स्थापित कर उसकी आकर्षक साज–सज्जा की जा चुकी है		
3	राहत शिविरों में धात्री महिलाओं के लिए अलग व सुरक्षित स्थान की व्यवस्था कर ली गयी है।		

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
4	राहत शिविरों में धात्री माताओं के लिए पोषण आहारों की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी है।		
5	राहत शिविरों में बच्चों के साथ खेल–कूद, शारीरिक अभ्यास, पठन–पाठन तथा पौष्टिक भोजन देने की समय सारिणी तय कर उसी अनुसार कार्य किया जा रहा है।		
6	वैकल्पिक ऑँगनबाड़ी केन्द्रों पर पंजीकरण की व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है।		
7	ऑँगनबाड़ी केन्द्र से निकले कचरे का सुरक्षित निपटान किया जा रहा है।		
i|uoki lh			
1	बाढ़ आपदा से हुई क्षति का आकलन कर उसकी सूचना उच्चाधिकारियों को दी जा चुकी है।		
2	ऑँगनबाड़ी केन्द्र की साफ–सफाई कर पुनः व्यवस्थित किया जा चुका है।		
3	पेयजल स्रोत को विसंक्रमित किया जा चुका है।		

सुखाड़ आपदा

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	iol rl;kjh		
1	आँगनबाड़ी केन्द्रों पर मौजूद मरम्मत योग्य जलस्रोतों की मरम्मति कर ली गयी है।		
2	कुपोषित एवं बीमार बच्चों के नाम, पता सहित सूची तैयार कर लिया गया है।		
3	पोषण आहार की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गयी है।		
	iR;Rrj		
1	पूरक आहारों का वितरण नियमित रूप से किया जा रहा है।		

अगलगी आपदा

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	iol rl;kjh		
1	आँगनबाड़ी केन्द्रों पर अगलगी से बचाव के उपायों की व्यवस्था जैसे– अग्निशामक यंत्र, बालू, मिट्टी आदि की व्यवस्था की जा चुकी है।		
2	अगलगी से प्रभावित होने की स्थिति में वैकल्पिक केन्द्र चलाने हेतु सुरक्षित स्थान की तलाश कर ली गयी है।		
3	फायर विभाग/आपदा विभाग द्वारा आयोजित मॉकड्रिल में सहभागिता की जा रही है।		

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	iR;Rrj		
1	प्रभावित होने की स्थिति में पहले से चयनित वैकल्पिक स्थान पर तत्काल संचालन किया रहा है।		
	iuokl h		
1	आपदा से केन्द्र हुई क्षति का आकलन कर उसकी सूचना उच्चाधिकारियों को दी जा चुकी है।		

भूकम्प आपदा

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	io r;kjh		
1	आपदा विभाग द्वारा आयोजित मॉकड्रिल में सहभागिता की जा रही है।		
2	भूकम्प आने की स्थिति में बच्चों को केन्द्र से बाहर निकलने हेतु आपात मार्ग की पहचान एवं व्यवस्था की जा चुकी है।		
3	भूकम्प आने के बाद जाने हेतु सुरक्षित स्थान की पहचान की गयी है।		
4	भूकम्प से बचाव हेतु बच्चों एवं अभिभावकों के बीच जागरूकता प्रसारित की जा रही है।		
5	केन्द्र में मौजूद आलमारी में भारी सामानों को नीचे के खाने में रखा गया है।		

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	iR;Rrj		
1	बच्चे सुरक्षित रास्ते से निकलकर पूर्व चिन्हित सुरक्षित स्थानों पर पहुँच गये हैं।		
	i|uokl h		
1	आपदा से केन्द्रों को हुई क्षति का आकलन कर उसकी सूचना उच्चाधिकारियों को दी जा चुकी है।		
2	भूकम्प के बाद पुनः पहले की स्थिति में आने हेतु कार्य योजना तैयार कर उसकी तत्काल कार्यवाही की जा रही है।		

लू लगना

Øekd	xfrfof/k	gk	ugh
	io. r|;kjh		
1	केन्द्र पर ओ0आर0एस0 घोल की पर्याप्त उपलब्धता हेतु स्वास्थ्य विभाग से सम्पर्क स्थापित किया गया है।		
2	लू लगने से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी एडवायजरी को समुदाय के साथ बैठक में बताया जा रहा है।		
	iR;Rrj		
1	प्रभावी लोगों को ओ0आर0एस0 पैकेट दिया जा रहा है।		

वज्रपात

Øekad	xfrfof/k	gk	ugh
io r;kjh			
1	वज्रपात से बचाव के उपायों को सरल भाषा में बच्चों को बताया जा रहा है।		
iR;Rrj			
1	आँगनबाड़ी केन्द्र के सभी खिड़की, दरवाजे, तारों वाले विद्युत उपकरण आदि बन्द कर दिये गये हैं।		